॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ७ अक्टूबर २००४

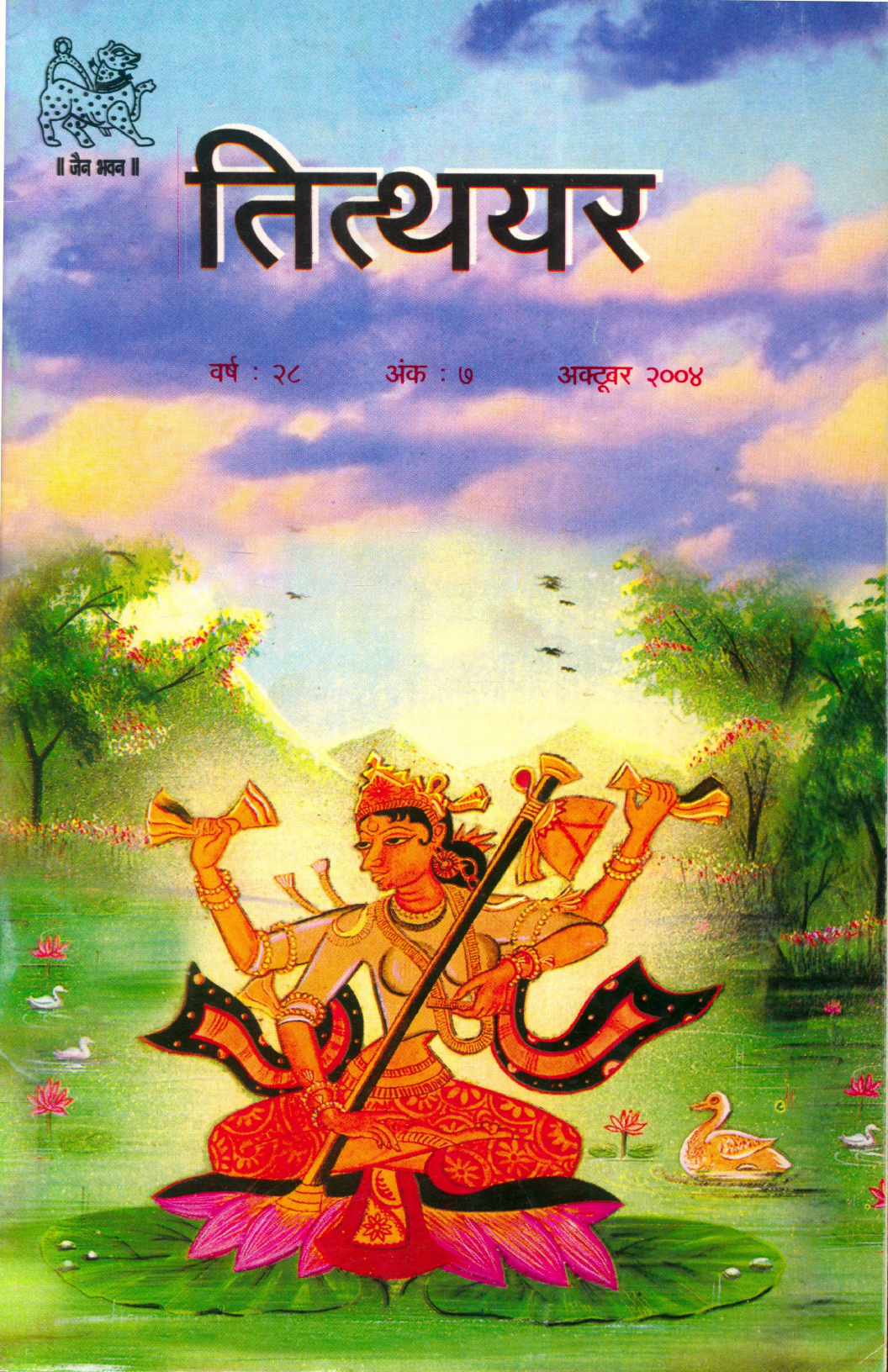

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - ७, अक्टूबर, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	क्षमा की शीतल धारा	मुनिश्री मिश्रीमल जी महाराज	३१७
२.	प्राकृत एवं अपभ्रंश जैनसाहित्य में कृष्ण	प्रो. सागरमल जैन	३२९
३.	संकलन	भूरचन्द जैन	३४५

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

क्षमा की शीतल धारा

मुनिश्री मिश्रीमल जी महाराज

क्षमा कायरता नहीं है :– बहुत से व्यक्ति ऐसा सोचते है कि क्षमा कायरों के अपने बचाव का साधन है। वे अपने से बलवान का मुकाबला नहीं कर सकते इसलिये क्षमा की बड़ाई करते हैं। एक बार किसी विदेशी पत्रकार ने गांधी जी से कहा–बलवान विदेशी सत्ता का मुकाबला करने की ताकत न होने पर आपकी अहिंसा क्षमा को आपने अपनी कायरता छिपाने का पर्दा बना रखा है। इसका उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा–सच्चा अहिंसक अपने प्राणों की आहुति देकर शत्रु का मुकाबला करेगा लेकिन कायरता वश पीठ न दिखायेगा। सच्चा अहिंसक अपने सात्विक बल द्वारा शत्रुओं को भी मित्र बना लेगा। यदि मुझे कायरता और हिंसा में से किसी एक के चुनाव का मौका मिले और कायरता चुनने के लिये अनेक प्रलोभन भी दिये जायँ तो प्राणरक्षा के लिये बजाय कायरता के हिंसा चुनने में नहीं झिझकूंगा। कायर व्यक्ति प्राणों का मूल्य नहीं समझ सकता है, वे जीते नहीं, किन्तु मर-मर कर जिया करते हैं। इसीलिये क्षमा को वीरों का भूषण कहा गया है–**क्षमा वीरस्य भूषणं।**

हिन्दी के महाकवि दिनकर ने कहा है–

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन विषरहित, विनीत सरल हो।

जिस सांप के दांत उखाड़ दिये गये हों यदि वह डंक न मारे तो इसमें कौन सी बड़ी बात है? लेकिन जो विषधर है, जिसके दाँतों में तीव्र गरल भरा है, यदि वह कुचल जाने पर भी चंडकौशिक नाग की तरह शांत रहता है तो यह उसकी सराहनीय क्षमा है। इसका मतलब है क्षमा निर्बलों का नहीं, वीरों का धर्म है। मैं सब कुछ करने में समर्थ होते हुए भी यदि किसी पर क्रोध नहीं करता, किसी का अनिष्ट नहीं करता और मन में भी राग-द्वेष की अग्नि नहीं भड़कने देता तो वह मेरी क्षमा है। अगर मैं निर्वीर्य हूँ, निस्तेज हूँ और कहूँ कि मैं क्षमा करता हूँ तो यह कैसी क्षमा।

अब आप कहेंगे कि क्षमा वीर पुरुष के लिये भूषण रूप कैसे है तो इस सम्बन्ध में भगवान महावीरकालीन एक घटना की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ।

उज्जयनी नरेश चंडप्रद्योत और सिन्धु सौवीर नरेश उदायन दोनों को चेटक राजा की पुत्रियां ब्याही थीं। दोनों प्रतापी और वीर थे। लेकिन चंडप्रद्योग लंपट और कामुक था। उसने उदायन की एक सुन्दर दासी का अपहरण कर लिया। दासी को वापस करने के लिये उदायन ने अनेक बार संदेश भी भिजवाया किन्तु चंड प्रद्योत ने उसे वापस नहीं लौटाया। अन्त में अन्य कोई उपाय न रहने पर उदायन ने चंडप्रद्योत पर आक्रमण कर दिया और उसे बंदी बना लिया। बंदी बनाकर जब वह अपने देश को लौटते समय दसपुर नगर के निकट आया तो चातुर्मास लग जाने से वहीं डेरे डाल दिये। संवत्सरी पर्व का अवसर आया तो राजा उदायन ने समस्त जीवों से क्षमायाचना करते हुए अपने बंदी चंड प्रद्योत से भी क्षमायाचना की।

इस पर चंडप्रद्योग ने कहा कि यह कैसी क्षमायाचना? मैं आपका बंदी हूँ, मेरा राज्य भी छीन लिया और उसके बाद भी क्षमा का यह ढोंग करते हो?

राजा उदायन सात्विक प्रकृति वाला था। चंडप्रद्योत का उक्त कथन उसके हृदय को छू गया। उसे चंडप्रद्योग के कथन में एक वास्तविकता प्रतीत हुई और संवत्सरी के वास्तविक रूप को साकार करने के लिये तत्काल ही उदायन ने उसे छोड़ दिया और ससम्मान उसका राज्य लौटा दिया।

उक्त घटना आज भी इतिहास में अमर है और यह बता रही है कि वीर पुरुष निर्भय होकर दुर्दान्त शत्रु के दोषों को क्षमा करके मित्र के समान आचरण करते हैं। दुष्ट को क्षमा करते समय वीर पुरुष यह भी विचार नहीं करते कि भविष्य में मौका मिलने पर मुझे मार डालेगा, मेरे परिवार, देश को भी हानि पहुँचा देगा।

उदायन की इस क्षमावीरता का उदाहरण हमें यह बताता है कि सच्चा वीर शत्रु को जीतने वाला नहीं, किन्तु शत्रु के भी अपराधों को क्षमा करने वाला है। योद्धा सिर्फ शत्रु के शरीर को जीतता है, क्षमा वीर उसके मन को जीतता है।

इसलिये क्षमा की महानता की महिमा गाते हुए महर्षियों ने कहा है-

जहिं आकोस वयणमासहिंज्जइ
जहिं पर दोषण जणमासिज्जइ।
जहिं चेयण गुण चित्तधरिज्जइ
तहिं उत्तमखम जिणे कहिज्जइ।।

– जहाँ पर आक्रोश युक्त दुर्वचनों को (दुष्ट पुरुष को दण्ड देने की सामर्थ्य होते हुए भी) सहन किया जाता है, दूसरे के दोषों को नहीं कहा जाता है, दोषों का विचार भी मन में नहीं लाया जाता है, किन्तु चेतन आत्मगुणों को हृदय में धारण किया जाता है, उनके चिन्तन मनन में लीन रहा जाता है, वही उत्तम क्षमा है, ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है।

आत्मनिरीक्षण का अवसर : क्षमा

अभी तक मैंने क्रोध विजय के रूप में क्षमा का कथन किया है कि क्रोध के आने पर उस पर ध्यान न दो, सहनशील बनो। लेकिन इतना मात्र ही क्षमा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी यथाशक्ति अपनी स्थिति, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर क्रोध को जीतने का उपाय करते हैं, और कर सकते हैं। बहुत से व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये दुष्ट पुरुष से गाली-गलौज आदि देने पर मन में क्रोध आने पर भी ऊपरी तौर पर क्षमा का रूप बनाये रखते हैं, उस पर भी मित्र जैसा भाव दिखाते हैं। किन्तु यह वास्तविक क्षमा नहीं है, उसने अपनी इज्जत रखने लिये मौन रखा है। और हो सकता है कि मौका मिलने पर उसे हानि पहुँचाने से भी नहीं चूकें।

लेकिन क्षमा का सच्चा आराधक तो आत्म-दोषों के निरीक्षण में तत्पर रहता है। दूसरे के द्वारा होने वाले अपमान के कारणों को अपने जीवन की प्रवृत्तियों में देखता है और सोचता है कि—

जे करम पूरब किये खोटे सहै क्यों नहीं जीयरा।

मैंने पूर्व जन्म में दुष्कर्म किये हैं, उन्हीं का तो यह फल मिल रहा है। इनके लिये दुख क्यों करूं। किये हुए कर्मों को शान्ति से भोग लूँ जिससे भविष्य में दुष्कर्मों का फल न भोगना पड़े। वह जानता है—

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो
न कोऽपि कस्यापि ददाति किन्चन।

— अर्थात् अपने पूर्वपार्जित कर्म को छोड़कर कोई भी किसी को दुख-सुख आदि कुछ भी नहीं दे सकता है। अतः मेरी ही भूल मुझे दुख दे रही है। यह कष्ट देने वाला दूसरा तो निमित्त मात्र है। मुझे तो इन फलों को भोगते हुए भी अपनी आत्मा को सिद्ध-बुद्ध मुक्त बनाना है। ऐसा साधक के मन में तो यही विचार रमता रहता है कि—

कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।

—उत्तराध्यन, ४।३

—उपार्जित कर्मो का फल भोगे बिना मुक्ति नहीं है। जब फल भोगे बिना मुक्ति नहीं तो फिर राग-द्वेष करने में लाभ क्या है? राग-द्वेष करने से तो और अधिक कर्म बंधेगे।

क्षमा की कसौटी : सहनशीलता

क्षमा की परीक्षा निम्न अवसरों पर होती है। जो बार-बार अपमानित किये जाने पर भी आत्म-निरीक्षण में तत्पर रहता है, वही क्षमावीर है। उसे दूसरो के व्यवहार पर दुख न होकर अपनी कमजोरी पर खेद होता है और पुनः गलती न करने का ध्यान रखता है, लेकिन पूर्वजन्म में किये कर्मों के उदय से गलती होती रहती है। इन अवसरों पर वे तो यही चिन्तन करते हैं-

अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यं चेतन ततः ।
क्व रुष्यामि क्व तुष्यामि मध्यस्थोहं भवाम्यतः ।।

जो पदार्थ दृश्य हैं वे अचेतन हैं, और जो चेतन आत्मा है, वह अदृश्य है। अतः किस पर रोष करूँ? किस पर प्रेम करूँ? मुझे तो मध्यस्थभाव में रमण करना ही उचित है। इस प्रकार का विचार करने वाले किसी न किसी दिन समस्त कर्मों का क्षय करके केवलज्ञानी बन जाते हैं।

इस सम्बन्ध में शास्त्रों में अनेक उदाहरण मौजूद हैं। जिनमें अल्पबुद्धि समझे जाने वाले भी अपनी आत्मा का कल्याण कर सके हैं। इनमें से मास-तुष मुनि का दृष्टान्त क्षमावीर की सहनशीलता पर प्रकाश डालता है।

किसी अल्पबुद्धि वाले व्यक्ति ने भद्र परिणामों से श्रमण धर्म अंगीकार किया। वह संयम-साधना में लीन रहता। लेकिन ज्ञानावरण कर्म के तीव्र उदय से उसे कुछ भी शास्त्रज्ञान नहीं हो पाया। इस पर साथी मुनि हंसी में पंडित जी महाराज कह कर उसे बुलाते। वह बेचारा अपनी स्थिति को समझकर साथी मुनियों की हंसी को सहता रहता, कुछ भी नहीं बोलता।

इधर गुरुजी ने भी उसकी यह दशा देखकर, शास्त्रों का अध्ययन न करके सिर्फ एक वाक्य याद करने के लिये दिया—मां रूष, मा तुष (न रोषकर, न खुश हो) लेकिन यह वाक्य भी यह याद न कर सका और माष-तुष शब्द याद कर लिया। अब साथी मुनि पंडित जी महाराज के बदले हंसी में उसे माषतुष मुनि कहकर पुकारने लगे। लेकिन यह मासतुष मुनि साथी मुनियों की मजाक को सहन करते हुए गुरुजी की शिक्षा को माषतुष शब्द में रटता रहा। वह अपने पूर्वोपार्जित ज्ञानावरण कर्म का चिन्तन करता रहता । उसे उन साथी मुनियों के वचनों पर जरा भी रोष नहीं आता। अन्त में क्षमा व शांति की गंगा में नहाते-नहाते उसके आत्म-परिणामों में इतनी विशुद्धता बढ़ गई कि त्रिकाल और त्रिलोकवर्ती समस्त पदार्थों को जानने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। साथी मुनियों द्वारा उपहास का पात्र माना जाने वाला एक सामान्य मुनि भी त्रैलोक्य पूज्यपद का अधिकारी बन गया।

तो यह उदाहरण है क्षमावीर की सच्ची सहनशीलता का। इसी प्रकार का एक और उदाहरण कुरगडुक मुनि का शास्त्रों में मिलता है। जिसमें बताया है कि क्षुधावेदनीय कर्म के तीव्र उदय होने से वे संवत्सरी का भी उपवास नहीं कर सके और जब गोचरी लेकर गुरुजी के पास पहुंचे तो उनकी गोचरी में गुरुजी ने दुत्कारते हुए थूक दिया। लेकिन कूरगडुक मुनि इस थूकने को अमृत मानकर अपने कार्य के लिये पश्चात्ताप करने लगे कि मेरे कारण ही गुरुजी को रोष आया है। मैं ऐसा भाग्यहीन हूँ कि आज संवत्सरी का भी उपवास न कर सका। थूली में गुरुजी के थूकने पर भी उनके मन में किंचिन्मात्र रोष नहीं आया लेकिन अपनी ही आत्मा की दुर्बलता पर विचार कर आत्मालोचन में ही लीन रहे। आत्मालोचन करते-करते परिणामों की इतनी विशुद्धता बढ़ी कि तत्काल केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। मुनिवृन्द के देखते-देखते ही देवगण केवलज्ञानी कूरगडुक मुनि की वंदना करने आने लगे।

यह चमत्कार कैसे हुआ? कुछ समय पहले ही गुरु जी द्वारा दुत्कारा जाने वाला साधारण सा मुनि विश्व वंदनीय कैसे बन गया? इसका कारण अन्यत्र खोजने की जरूरत नहीं है। स्वयं कूरगडुक मुनि की सहनशीलता है, जिसके फलस्वरूप आत्म-परिणामों में शान्ति धारण किये रहने से सामान्य मुनि असाधारण केवलज्ञान प्राप्त कर सके।

लेकिन यही कूरगडुक केवलज्ञानी अपने सामान्य मुनि जीवन में गुरुजी के प्रति रोष करते, गुरुजी को भली बुरी कह देते तो कठोर कर्मबंध करके इस संसार में भटक सकते थे। इसीलिये कहा गया है—

उत्तम खम तिल्लोयहसारी उत्तम खम जम्मोवहि तारी ।।

—उत्तम शिक्षा तीन लोक में सारभूत है, संसार सागर से पार उतारने वाली है।

क्षमा का पालनकर्ता :—

क्षमा का पालन प्रत्येक सचेतन के लिये हितकारी है। लेकिन मनुष्य जो सब जीवों में सबसे बुद्धिमान और बलशाली होने से क्षमाधर्म की साधना कर सकने में समर्थ है, उसे तो सर्वप्रथम यह साधना करनी चाहिये। मनुष्य जीवन से सिद्धि भी प्राप्त की जा सकती है और अनन्त संसार भी । अतः ऐसे महामूल्यवान जीवन के द्वारा यदि सिद्धि के मार्ग पर चला जाये तो एक व्यक्ति को ही नहीं अनेक व्यक्तियों को लाभ मिल सकता है।

मानव जीवन साधना का पथ है। साधना के पथ पर जो सर्वात्मना अग्रसर हैं वे साधु, और क्रम-क्रम से अग्रसर होने वाले व्यक्ति श्रावक कहलाते हैं। साधु तो अहर्निश आत्मसाधना में रत रहते हुए अपने में विद्यमान क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या आदि वैभाविक विकारों का शमन करने को तत्पर रहते हैं। इसके लिये इन्द्रियजय करते हैं, जीव मात्र पर आत्मवत् दृष्टि रखते हैं, तप द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों को क्षय करने के लिये अग्रसर होते हैं। और संसार के जीवों की कल्याणकामना उनके मन में रहती है—

शिवमस्तु सर्व जगतः परहितनिरता भवंतु भूतगणा :।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ।।

—समस्त जगत का कल्याण हो, सब प्राणी परोपकार में लग जायँ, सब दोषों का नाश हो एवं सर्वत्र सुख का प्रसार हो। इसीलिये वे किसी से राग-द्वेष नहीं करते और न इष्ट वस्तु प्राप्ति में सुख और अनिष्ट वस्तु का संयोग होने पर दुख का अनुभव करते हैं। वे तो समग्र विश्व को समभाव से देखते हुए न तो किसी का प्रिय करते हैं और न किसी का अप्रिय! किन्तु भेदबुद्धि से परे रहकर मध्यस्थ भाव पूर्वक संयमसाधना में रत रहते हैं।

ऐसे साधक ही क्षमा धर्म के सच्चे पालक हैं। साधु रूपी महान उत्तम पुरुषों द्वारा क्षमा का यथार्थ रूप में पालन होने में मणि-कांचन जैसा सुयोग

बन जाता है। फिर भी कोई अपने को साधु कहता हो, साधु पद की सभी क्रियाएँ करता हो, तपस्या द्वारा शरीर को भी कृश कर दिया हो लेकिन क्रोध का उग्र अंश मन में विद्यमान हो तो वह साधुपद के योग्य नहीं रहता है। वह साधुता का पात्र नहीं है और जीवन भर की साधना समाप्त हुई जैसी हो जाती है। उसकी साधुता तो कवि ज्ञानचंद जी के शब्दों में—

केवल एक क्षमा बिन ही तप संयम शील अकारथ जानो,
पाक सुपाक बन्यो सुथरो जिय लून विहीन अनाज को खानो।

साधुता की सब क्रियाएँ हैं, तप-संयम की आराधना भी की जा रही है, लेकिन क्षमा गुम नहीं है तो उसकी साधुता नमक बिना के अच्छे सुन्दर बने भोजन के समान है। ऐसे साधुओं को तो **निर्गन्धा इव किंशुकाः** की उपमा दी जा सकती है। जब तक क्रोध का वास है तब तक सच्ची साधुता नहीं आ सकती है। क्षणमात्र का क्रोध उसकी जीवन भर की साधना को मिट्टी में मिला देता है और भयंकर अनर्थ कर बैठता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझाते हैं—

एक विनीत शिष्य ने आत्म-साधना के लिये तपस्या करने की आज्ञा माँगी। गुरुजी ने शिष्य की शुभ भावना का विचार कर—**कृशं कुरु** दुर्बल बनाओ (पतली पाड़) की शिक्षा देते हुए आज्ञा दे दी। शिष्य ने प्रसन्न मन से मासखमण की तपस्या प्रारम्भ कर दी। जैसे ही पारणा का दिन आया तो वह पुनः गुरुजी के समीप आज्ञा के लिये आया। गुरुजी ने उसकी परीक्षा करने के लिये पुनः निर्बल बनाने की आज्ञा दे दी। शिष्य पुनः तपस्या में लीन हो गया। इसी प्रकार तीसरा महीना भी तपस्या करते बीत गया तो शिष्य पारणा के लिये उपस्थित हुआ, लेकिन गुरुजी ने फिर वही कहा—निर्बल कर! परली पाड़! शिष्य ने गुरुजी के भावों को तो समझा नहीं और क्रोध में आकर अपने अति कृश शरीर को दिखाते हुए बोला—अब न तो शरीर पर मांस रहा है और न रक्त की बूँद! और आप बार बार कहते जा रहे हैं—निर्बल बनाओ! पतली पाड़ो! और किनती पतली करूँ।

गुरुजी शांत थे, उन्होंने शिष्य को शिक्षा देते हुए कहा—आयुष्मान्! तपस्या शरीर को निर्बल बनाने के लिये नहीं की जाती है, लेकिन काम, क्रोध, मद, लोभ रूपी विकारों को कमजोर करने के लिए की जाती है। इतने दिन तपस्या करने से तुम शरीर को सुखा चुके हो, शरीर तुम्हारा पतला हो गया

है लेकिन कषायों में तो पहले से ज्यादा तेजी आ गई है। शरीर को पतला बनाने के बजाय कषायों को पतला बना पाते तो यह मानवजन्म सफल हो जाता । मैंने कषायों को पतली करने के लिये ही कहा है।

गुरुजी का उपदेश सुनते ही शिष्य की आँखें खुल गईं। गुरुजी की आज्ञा का सही मतलब जब समझ सका तो पश्चात्ताप करते हुए कषायविजय के लिए संयम साधना में रत हो गया।

तो बंधुओ, तपस्या कषायों को जीतने के लिये की जानी चाहिये। यदि तपस्या से शरीर के सूखने पर भी कषाय निर्बल नहीं हुई तो सब जप, तप, संयम अज्ञानियों के कार्य जैसा है। इसीलिए कषायों पर विजय प्राप्त करने के लिए और उसमें भी सर्वप्रथम क्रोध को जीतना, शांत करना श्रमण धर्म का लक्षण कहा है—

उवसम सार खु सामण्णं ।।

—बृहत्कल्प० १ । ३५

इस प्रकार मुनि जन कषायोद्रेक के प्रबल कारण मिलने पर भी रंचमात्र भी क्रोधादि भाव न लाकर उत्तम क्षमा को धारण करते हैं। ये क्षमा के उत्तम पालक सभी के वंदनीय हैं।

क्षमा के पालन करने वालों में दूसरा दर्जा है श्रावकों का। श्रावकों का दूसरा दर्जा इसलिए माना जाता है कि वे श्रमणधर्म का साक्षात् रूप से पालन न करते हुए भी उस मार्ग पर क्रम-क्रम से बढ़ने की भावना रखते हुए अपने जीवन को साधते हैं। वे संयम-साधना का एक देश से पालन करते हुए लोक व्यवहार चलाने से कारण मिलने पर कुपित भी हो सकते हैं। देश-समाज की सुरक्षा के लिये विरोधी हिंसा में प्रवृत्ति भी करनी पड़ती है। लेकिन विरोधी का मुकाबला करते हुए भी शत्रु के प्रति किसी प्रकार का वैर-विरोध नहीं होता है। इन कारणों से श्रावक को क्षमा का दूसरे दर्जे का पालक माना जाता है।

इतिहास श्रावकव्रतधारी वीर पुरुषों के उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने आततायी से देश की रक्षा, शरणागत की रक्षा के लिए शस्त्र उठाये, धर्म की रक्षा के लिए भी अपने प्राणों को होम दिया लेकिन रणभूमि में रह कर भी सामायिक करते हुए यही विचार किया कि—

खामेमि सव्वे जीवा सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेर मज्झ ण केणवि ।।

—मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ और सब जीव भी मुझे क्षमा करें। मेरी सभी के प्रति मैत्री भावना है, किसी के साथ मेरा वैर नहीं है, इतना ही नहीं, वह जीव मात्र से क्षमा मांगते हुए चिंतन करता है कि मैंने मन द्वारा जो कुछ भी दुश्चिन्तन किया हो, वचन द्वारा कटु वचन बोला हो अथवा शरीर द्वारा दुष्प्रवृष्टि की हो वे सब दुष्कृत मिथ्या होवें। मैं तो धर्म में स्थिर चित्त होकर समभाव पूर्वक सर्व जीवों से अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगता हूँ।

क्षमा पालन की दृष्टि से श्रमण और श्रावक की मर्यादा को सुनने के बाद आप लोगों के मन में शंका हो सकती है कि न तो हम श्रमणधर्म का पालन कर रहे है और न श्रावकाचार के अनुरूप हमारी प्रवृत्ति है, हम तो एक साधारण जन हैं। हम लोग तो क्षमा का पालन कर ही नहीं सकते हैं। पग-पग पर क्रोध के मौके आते रहते हैं अतः इन क्रोध के मौकों को कैसे टालें? आप लोगों का ऐसा सोचना ठीक भी है। लेकिन जरा गहराई से सोचेंगे तो मालुम हो सकेगा कि क्षमा पोशाक नहीं है, कोट-कमीज या धोती नहीं है जिसे ऊपर से पहनना पड़। यह तो आपकी आत्मा का स्वभाव है, इंसानियत की पहचान है, दानव से मानव बनने का रास्ता है। क्षमा धर्म का पालन करने के लिये सिर्फ इतना सा ध्यान रखना है कि क्रोध का छोटा या बड़ा निमित्त मिलने पर भी शान्ति भंग न होने दें। क्रोध को इन ऊपर के दिखने वाले शत्रु की अपेक्षा वैरी मानने का विचार करना चाहिये। वैर से वैर की ही वृद्धि होती है और कुयोनियों में लेना पड़ता है।

इतना भी न हो सके तो आवेशवश तत्काल ही कार्य करने में न लगो। कैसा भी गुस्सा आया हो लेकिन प्रतिकार करने से पहले अपनी शक्ति, साधन आदि का विचार करो। बिना विचारे काम करने से कहीं ऐसा न हो कि—

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ।
काम बिगारे आपनो जग में होत हसाय ।।

अब सोचना आपको है कि अपना काम बिगाड़ कर हंसी का पात्र बनना है या काम सुधार कर सम्मा का पात्र।

क्रोध की दवा :—

क्रोध शैतान है, क्रोध करना अच्छा नहीं है आदि समझते हुए भी बहुत से व्यक्ति कहते सुने जाते हैं कि कोशिश करने पर भी क्रोध रुकता

नहीं, गुस्सा आ ही जाता है। इसको रोकने का उपाय हो तो बताइये। तो गुस्से को रोकने के लिए एक उदाहरण बताता हूँ।

एक सेठ थे। बड़े मिलनसार, धार्मिक और सज्जन। उनकी पत्नी और पुत्र भी सेठ के स्वभाव जैसे थे। घर में सब प्रकार से सुख-शान्ति थी, नौकर-चाकर सदा प्रसन्न रहते थे। लड़के के जवान होने पर अच्छे खानदान की कन्या से विवाह कर दिया गया। बहू भी घर की इज्जत को समझने वाली थी, लेकिन उसमें एक दुर्गुण भी था कि बात-बात में क्रोधित हो जाती। नौकर-चाकरों से झगड़ पड़ती। इससे घर में अशान्ति रहने लगी। सभी दुखी रहने लगे। सेठ, सेठानी और उसके पति ने बहुत समझाने की कोशिश की। बहु को जितना समझाते, उसका पारा और बढ़ जाता। दिन रात क्रोध में डूबे रहने से उसे फिट आने लगे। इसलौते बेटे की बहू होने से दवातारू में भी कोई कसर नहीं रखी गई लेकिन फायदा कुछ भी नहीं हुआ।

अन्त में बहु को पीहर भेज दिया गया। पीहर वाले भी उसका इलाज कराते-कराते निराश हो गये, लेकिन कोई डाक्टर वैद्य रोग की जड़ को नहीं पकड़ सके।

किसी एक समय घूमते-घामते एक संत महात्मा सेठ के घर पधारे। सेठ ने अपनी रामकहानी सुनाई। महात्माजी ने सब हाल सुनकर रोगी को देखने की इच्छा बताई। महात्मा जी ने बहू को देखा, उसकी रामकहानी सुनी।

महात्माजी ने सब कुछ समझकर बहू को दिलासा देते हुए कहा-यह रोग तो मैं मिनटों में ठीक कर सकता हूँ। तुम्हारा रोग तो कुछ भी नहीं है, मैंने बड़े-बड़े रोगों का इलाज करके सैकड़ों व्यक्तियों को निरोग कर दिया है। कल सबेरे मेरे ठहरने के स्थान पर आ जाना।

दूसरे दिन बड़े सबेरे सेठ बहू को लेकर महात्मा जी के स्थान पर जा पहुँचा। महात्मा जी ने सेठ को आया देख अपनी झोली में से एक कागज की पुड़िया और शीशी निकाली। पुड़िया में कुछ भस्म जैसी थी और शीशी में रंगीन पानी। उसके सेवन की विधि बताते हुए महात्मा जी ने कहा कि जैसे ही दिमाग में कुछ गरमी आते दीखे, तत्काल थोड़ी-सी भस्म मुँह में डालकर शीशी की दवा पिला देना, और ध्यान रखना कि दवा गले के नीचे न उतर जाये, नहीं तो मौत भी हो सकती है, पागलपन और भी बढ़ सकता है।

मौत का डर दुनिया में सबसे बड़ा डर है। दवा लेकर सेठ घर आये। पहले दिन तो बहू ने दवा लेने में आनाकानी भी की लेकिन दो चार दिन बाद बराबर दवा को मुँह में भरे रहने से स्वयं बहू अपने आप में एक नया उत्साह देखने लगी। क्रोध आने पर भी मुँह भरा होने से किसी से कुछ कह नहीं पाती। क्रोध तो बोलने से बढ़ता है। मौन करते-करते करीब आठ दिन बीत गये। आठ दिन की दवा और दे दी। इसी प्रकार आठ-आठ दिन करके पूरा महीना गुजर गया।

महीना बीतने पर स्वयं सेठ और उसके घरवालों को महान आश्चर्य हुआ कि बात-बात पर क्रोध करने वाली बहू का स्वभाव बिलकुल बदल गया। चेहरे पर शान्ति झलकती है और घर में सुख शान्ति पुनः लौट आई है।

इस बात को महात्मा जी का प्रताप मानकर सेठ सपरिवार महात्मा जी की सेवा में उपस्थित हुआ और बार-बार कृतज्ञता प्रकट करते हुए सेवा का मौका देने की विनती की।

महात्मा जी ने अपनी दवा और बहू के रोग का रहस्य खोलते हुए कहा कि आपकी बहू को रोग कुछ भी नहीं था, सिर्फ क्रोध में आकर जैसा मुंह में आता वैसा बोल देती थी। इससे बात बढ़ जाती और घर में दिनरात लड़ाई-झगड़े का वातावरण बना रहता था। इसलिये इसका मुँह बन्द रखने के लिये साधारण से पानी को मुँह में भरे रहने की तरकीब निकाली कि पानी भरे रहने से मुँह खुल तो सकेगा नहीं, तब लड़ाई झगड़े की नौबत ही नहीं आयेगी। क्योंकि ऐसी महापुरुषों ने कहा है—

दीधां गाली एक है, फ्लटै होय अनेक।
जो गाली देवे नही, तो रहे एक की एक ।।

एक माह तक यही उपाय करने से अब रोग का मूल कारण हट गया। जब रोग का कारण ही नहीं तो रोग अपने आप ही जाता रहा। आपको भी शान्ति मिली और पुत्रवधू के स्वास्थ्य व स्वभाव में भी परिवर्तन हो गया।

तो, बंधुओ! उक्त उदाहरण द्वारा आप लोग भली भाँति समझ गये होंगे कि क्रोध नदी की बाढ़ के समान आता है और उसके आने से पहले उपाय कर लिया जाये या क्रोधी व्यक्ति के कहने सुनने के बदले में कुछ भी उत्तर न दिया जाये तो फिर वह किस पर क्रोध करेगा, जब जबाब ही नहीं मिलेगा तो कितनी देर तक अकेला क्रोध में भरा बैठा रहेगा? क्रोध मनुष्य का

स्वबाव नहीं है, इसलिये कोई भी व्यक्ति हमेशा क्रोध को जीतने की सर्वोत्तम आषधि मौन है। अगर आपको मौन के फायदे देखना हो तो प्रतिदिन कम से कम एक घड़ी या आधी घड़ी मौन रहकर अनुभव कीजिये। आप की परिणति में एक नया परिवर्तन आयेगा, एक नया उत्साह पैदा होगा और स्वभाव में भी फरक दिखेगा। क्रोध की स्थिति का वैज्ञानिकों ने परीक्षण करके निर्णय दिया है कि क्रोध करते समय खून में जहर प्रकट हो जाता है और उसकी मात्रा बढ़ने पर आदमी मर भी सकता है। मैंने सुना है कि ए म माता ने लड़ाई करते करते बच्चे को स्तनपान कराया कि थोड़ी देर बाद वह बच्चा मर गया।

इस क्रोध से बचने के लिये भगवान ने क्षमाधर्म का उपदेश दिया है और क्रोधी व्यक्ति की दशी बतलाते हुए कहा कि—

कुद्धो..... सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज।

—प्रश्नव्याकरण सूत्र संवरद्वार

क्रोध में अन्धा व्यक्ति सत्य, शील और विनय का नाश कर डालता है।

अतएव हमें अपना मनुष्य जीवन सफल करना है और इस अस्थिर जीवन को अमृतमय बनाना है तो कम से कम दिन के चौबीस घण्टों में एक दो घण्टे क्रोध न करने, मौन रखने और क्षमा धर्म के चिंतन मनन में लगाने का संकल्प करना चाहिये। मानव जन्म अनेक तपस्याओं का फल है और यह जीवन भी कषायों में बिता दिया तो फिर आत्मोद्धार होना असंभव माना जायेगा। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन के एक-एक पर का सदुपयोग करना चाहिये तभी मानव पर्याय का मिलना सार्थक माना जायेगा। अपनी आत्मा को निरन्तर ऊँचा उठा चाहिये तथा ऐसा प्रयत्न करते रहना चाहिए जिससे अनादिकाल से चली आ रही भव यात्रा का अन्त हो सके और जीवन आनन्द मय बन सके।

समाप्त

प्राकृत एवं अपभ्रंश जैनसाहित्य में कृष्ण

प्रो. सागरमल जैन

राम और कृष्ण ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो युगो-युगो से भारतीय जन मानस के श्रृद्धा के केन्द्र रहे है। इन दोनों व्यक्तियों के जीवन चरित्रों ने भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति को बहुत अधिक आन्दोलित और प्रभावित किया है। वैष्णवधर्म के उद्‌भव एवं भक्तिमार्ग के विकास के साथ ये दोनों व्यक्तित्व अधिकाधिक जनश्रद्धा के केन्द्र बनते चले गए। इनके जीवन वृत्तों पर रचित रामायण, महाभारत और भागवत भारतीय परम्परा के ऐसे ग्रन्थ है, जो सभी भारतीय लोक भाषाओं में अनुदित है और भारतीय जनसाधारण के द्वारा अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति के साथ पढ़े व सुने जाते है। साहित्यिक रूझान की दृष्टि से राम के चरित्र की अपेक्षा भी कृष्ण का चरित्र पूर्व मध्य काल में अधिक प्रभावी रहा है। राम के चरित्र को अधिकाधिक लोक व्यापी बनाने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस को है। राम सदाचार-सम्पन्न, सन्मार्ग-संरक्षक एक वीर पुरूष हैः जबकि कृष्ण एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है। वे एक नटखट बालक, रसिक युवा, धर्म और समाज के संरक्षक वीर पुरुष, कुशल राजनेता तथा धर्म एवं अध्यात्म के उपदेष्टा प्रज्ञा-पुरुष सभी कुछ है। उनके जीवन के इस बहुआयामी स्वरूप ने उन्हें अधिक प्रभावी बना दिया है।

अर्धमागधी आगम साहित्य में कृष्ण :–

जहां तक जैन परम्परा का प्रश्न है, उसने राम और कृष्ण दोनों के कथानकों को अपने में आत्मसात करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि जैन परम्परा में विमलसूरि के पउमचरियं (प्राकृत), जिनसेन के पद्‌मपुराण (संस्कृत), रविषेण के पद्मचरित (संस्कृत) एवं स्वयम्भू के पउमचरिउ (अपभ्रंश) के साथ-साथ राजस्थानी और हिन्दी में अनेक ग्रन्थ रामकथा पर मिलते है, किन्तु जैन आगम साहित्य में जितना विस्तृत विवरण कृष्ण कथा का मिलता है उतना रामकथा का नहीं। जैन आगमों में राम के नाम निर्देश

के अतिरिक्त उनके जीवनवृत्त का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। जबकि कृष्ण के जीवन वृत्त के अनेक उल्लेख उनमें उपलब्ध है। जैन परम्परा में कृष्ण का जीवन चरित्र २२वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के जीवनचरित्र के साथ जुड़ा होने के कारण है, उसे राम की अपेक्षा भी आगम साहित्य में अधिक स्थान मिला है। आगम ग्रन्थों में समवायांग, उत्तराध्ययन, ज्ञाताधर्मकथा, अन्तकृत्दशा, प्रश्नव्याकरण आदि आगमों में कृष्ण संबंधी उल्लेख है। आगम साहित्य में कृष्ण के चरित्र को राम के चरित्र की अपेक्षा जो प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है, उसका कारण केवल यही नहीं है कि वे जैन परम्परा के २२वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के चचेरे भाई है, अपितु उनका वासुदेव (अर्द्धचक्री) होना भी है। जैन परम्परा में राम एवं कृष्ण दोनों की गणना शलाका पुरुषों में की गई है, किन्तु यहां राम को बलदेव के रूप में स्वीकृत किया है वहीं कृष्ण को वासुदेव के रूप में स्वीकृत किया गया है। बलदेव के अपेक्षा वासुदेव का पद निश्चय ही अधिक महत्वपूर्ण कहा जा सकता है, क्योंकि वासुदेव शासनसूत्र का स्वयं नियामक होता है। जबकि बलदेव मात्र उसका सहयोगी। साथ ही जैन परम्परा में कृष्ण को भविष्य में होने वाले १२वें तीर्थंकर के रूप में भी स्वीकार किया गया है और यह सत्य है कि जैन परम्परा में तीर्थंकर ही सर्वोच्च व्यक्तित्व है। इस आधार पर हम कह सकते है कि राम के अपेक्षा कृष्ण ने जैनों को अधिक प्रभावित किया है।

जहां तक कृष्ण के जीवन-वृत्त के संबंध में विस्तृत एवं स्वतंत्र ग्रन्थ का प्रश्न है संस्कृत एवं अपभ्रंश में हरिवंश पुराण के रूप में सर्वप्रथम ऐसे स्वतंत्र ग्रन्थ लिखे गये। किन्तु आगे चलकर रिट्ठनेमिचरिऊ, नेमिनाहचरिउ, पदुम्नचरिउ, कण्हचरित आदि अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं, जिनमें कृष्ण-कथा को प्रमुख स्थान मिला है।

जैन आगम साहित्य में प्राचीनतम स्तर के अर्थात् ईस्वी पूर्व के ग्रन्थों यथा आचारांग, ऋषिभाषित, सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक में कृष्ण के जीवन-वृत्त का हमें कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता है। ऋषिभासित में वारिषेण कृष्ण के उपदेशों का विवरण है, किन्तु उनका देवकी पुत्र कृष्ण से संबंध जोड़ पाना कठिन है। मात्र उत्तराध्ययन सूत्र के रथनेमि (रहनेमिज्ज) नामक अध्ययन में राजीमति और रथनेमि के कथा प्रसंग में शौरीपुर नगर के

वसुदेव नामक राजा की रोहिणी और देवकी नाम की रानियों के पुत्र के रूप में क्रमशः राम और केशव (कृष्ण) का उल्लेख है। इस कथा प्रसंग में केशव के द्वारा राजीमति का अरिष्टनेमि से विवाह निश्चित करने एवं अरिष्टनेमि के प्रव्रजित होने पर उन्हें शुभकामना प्रेषित करने एवं वंदन करने का भी उल्लेख है। संभवतः यही एक ऐसा साहित्यिक प्राचीनतम आधार है, जहां कृष्ण जैन परम्परा में सर्वप्रथम उल्लिखित होते है। यद्यपि द्वितीय स्तर के आगम ग्रन्थों में अर्थात् ईसा की प्रथम द्वितीय शताब्दी में निर्मित आगम ग्रन्थों में कृष्णकथा का धीरे-धीरे विस्तार होता गया है। इस ग्रन्थों में समवायांग पूर्वभाग के ५४वें समवाय में २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव एवं ९ वासुदेव ये ५४ उत्तम पुरुष होते है—मात्र यह उल्लेख है। यहां इनके नामों का भी उल्लेख नहीं है। किन्तु समवायाम के ही अंतिम भाग में बलदेवों एवं वासुदेवों के वर्तमान भव के नाम, पूर्व भव के नाम, निदानकारण और नगरों के नाम तथा उनके माता-पिता, पूर्व भव के धर्माचार्य और वर्तमान भव के प्रतिशत्रु (प्रतिवासुदेव) के नाम आदि का उल्लेख है। इसी प्रसंग में नवे वासुदेव के रूप में कृष्ण का नाम आता है। कृष्ण के पिता के रूप वसुदेव और माता के रूप में देवकी का उल्लेख यहां भी हमें प्राप्त होता है।

इसी प्रसंग में सामान्य रूप से वासुदेवों और बलदेवों की सम्पदा, शारीरिक शक्ति, व्यक्तिगत आदि का विस्तृत उल्लेख किया गया है। इस चर्चा में जो महत्वपूर्ण उल्लेख है वह यह कि बलदेव कटिसूत्र वाले नीले कौशेयक वस्त्र को और वासुदेव कटिसूत्र वाले पीतकौषेयक वस्त्र को धारण करते है। इसी प्रकार यहां यह भी बताया गया है कि बलदेव हल और मूसल रूपी अस्त्रों को धारण करते है और वासुदेव श्रृंग, धनुष, पांचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमुदकी गदा, नन्दक खड्ग धारण करते है और उनका मुकुट कौस्तुभमणि से युक्त होता है। वैष्णव परम्परा में कृष्ण और बलदेव की वेश-भूषा एवं आयुध आदि की जो चर्चा है उससे इस विवरण की समानता है। यद्यपि हमें स्मरण रखना चाहिए कि ये सभी उल्लेख समवायांगसूत्र के अंतिम भाग में पाये जाते है जो उसके परिशिष्ट के रूप में है। इससे ऐसा लगता है कि इन्हें समवायांग के बाद में जोड़ा गया है। फिर भी वर्तमान समवयांग का जो कुछ स्वरूप हैं, वह ईसा की ५वीं शताब्दी में निश्चित हो

गया था। अतः ये सारे विवरण उनसे प्राचीन ही है, परवर्ती नहीं, फिर भी यह मानने में हमें आपत्ति नहीं होना चाहिए कि यह समग्र विवरण हिन्दू परम्परा से प्रभावित है।

कृष्ण के व्यक्तित्व के संबंध में आगम साहित्य में समवायांग के पश्चात् कृष्ण का जो प्राचीन उल्लेख हमें प्राप्त होता है, वह हमें ज्ञाताधर्मकथा में मिलता है। विद्वानों ने ज्ञाताधर्मकथा को लगभग ईसा की द्वितीय शताब्दी के आसपास की रचना माना है। ज्ञाताधर्मकथा में कृष्ण संबंधी उल्लेख उसके शैलक एवं द्रौपदी नामक अध्ययनों में है। यद्यपि द्रौपदी नामक अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य विषय तो द्रौपदी के पूर्वभव एवं वर्तमानभव का चित्रण है, किन्तु प्रसंगवश इसमें कृष्ण संबंधी अनेक विवरण उपलब्ध है। विशेष उल्लेखनीय यह है कि यहां द्रौपदी के पाँच पति होने की कथा को स्वीकारते हुए भी उसके व्यक्तित्व की चारित्रिक गरिमा को बनाये रखने के लिए उसके पूर्वभव की कथा भी जोड़ी गई। कथा का सारांश यह है कि द्रौपदी पूर्वभव में अपनी गुरूणी की आज्ञा न मानकर वनखण्ड में स्थित हो उग्र तपस्या करती है और प्रसंगवशात् वह वहां एक वैश्या को पाँच प्रेमियों के साथ क्रीड़ा करते हुए देखती है। उस समय वह यह निश्चय कर बैठती है कि यदि मेरी तपस्या का फल हो तो मुझे भी भविष्य में पाँच पतियों के साथ ऐसी क्रीड़ा करने का सौभाग्य प्राप्त हो। इस निश्चय (निदान) का परिणाम यह होता है कि उसे अपने वर्तमान भव में पाँच पाण्डवों की पत्नि बनना पड़ता है। इस प्रकार यहां हिन्दू परम्परा में प्रचलित द्रौपदी की कथा को अधिक सुसंगत और तार्किक बनाने का प्रयत्न किया गया है, ताकि द्रौपदी के निर्मल चरित्र को बिना खरोंच पहुंचाये ही पांच पतियों वाली घटना को तर्कसंगत रूप में प्रस्तुत किया जा सके। इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि यहां द्रोपदी और पाँच पाण्डवों को जैन धर्म का अनुयायी बताया गया है। मात्र यही नहीं नारद को असंयमी परिव्राजक के रूप में चित्रित करके जैन धर्म की अनुगामिनी द्रौपदी द्वारा समुचित आदर न देने की घटना का भी उल्लेख है। इससे ऐसा लगता है कि ज्ञाताधर्मकथा के इस कथाप्रसंग की रचना के समय तक जैन संघ में धार्मिक कट्टरता का प्रवेश हो चुका था क्योंकि जहां जैन परम्परा के प्राचीन स्तर के आगम ग्रन्थ ऋषिभासित में देवनारद को अर्हत्ऋषि कहकर सम्मानित ढंग से

उल्लिखित किया गया है वहां इस कथा प्रसंग में नारद को असंयमी, अविरत और कलहप्रिय तथा पद्नाभ के साथ मिलकर द्रौपदी के अपहरण की योजना बनाने वाला कहा गया है। उल्लेखनीय यह भी है कि इन नारद को कडच्छुप नारद कहा गया है। यद्यपि यह विवादास्पद ही है ऋषिभासित के देवनारद और ज्ञाता के कडच्छुप नारद एक ही व्यक्ति है या अलग-अलग व्यक्ति है, यह कहना कठिन है।

द्रौपदी के इस कथा प्रसंग में प्रसंगवश पांचो पाण्डवों, कुन्ती और श्रीकृष्ण का उल्लेख भी है। कथा के अनुसार द्रौपदी का पद्मनाभ द्वारा अपहरण हो जाने पर पाण्डव चिन्तित होते हैं तथा द्रौपदी को खोजने में श्री कृष्ण को ही समर्थ मानकर अपनी माता कुन्ती को श्रीकृष्ण के पास भेजकर द्रौपदी की खोज के लिए उनसे निवेदन करते है। इसमें कुन्ती को कृष्ण की पितृभगिनी कहा गया है। कृष्ण कुन्ती को आश्वस्त करते है कि मैं द्रौपदी की खोज करूंगा। वे नारद से द्रौपदी के अपहरण की घटना की जानकारी प्राप्त करते हैं तथा पाण्डवों को यह संदेश देते है कि वे पूर्व दिशा में गंगा नदी और समुद्र के संगम स्थल पर ससैन्य तैयार होकर पहुंचें। कृष्ण स्वयं भी ससैन्य वहां पहुंचकर लवण समुद्र के मार्ग से पाण्डवों के साथ पद्मनाभ की राजधानी अमरकंका पहुँचते है। इसी प्रसंग में पद्मनाभ के पास दूत का भेजना, पद्मनाभ से युद्ध में पाण्डवों का पराजित होना, अन्त में श्री कृष्ण द्वारा पद्मनाभ को पराजित करना और द्रौपदी को वापस प्राप्त करने के उल्लेख है। इस कथा प्रसंग में श्री कृष्ण के पुरुषार्थ और पराक्रम की चर्चा के साथ-साथ यह भी उल्लेख हुआ है कि द्रौपदी सहित पांचो पाण्डव और श्रीकृष्ण जब वापस आते है तब पाण्डव नौका द्वारा पहले गंगा पार कर लेते है, किन्तु गंगा पार करने के लिए श्री कृष्ण को वापस नौका नहीं भेजते है। फलतः वे गंगा नदी को तैरकर पार करते है और पाण्डवों पर कुपित हो उन्हें देश निर्वासन की आज्ञा देते है। पाण्डव कुन्ती के पास पहुँचते हे और सारी घटना उसे सुनाते है। कुन्ती पुनः कृष्ण के पास पहुँचती है और श्री कृष्ण से अपने पुत्रों की देश निर्वासन की आज्ञा को वापस लेने की प्रार्थना करती है। श्रीकृष्ण कहते है कि वासुदेव के वचन मिथ्या नहीं होते हैं, अतः देश निर्वासन की आज्ञा वापस लेना संभव नहीं है। अंत में वे पाण्डवों को

दक्षिण दिशा में जाकर समुद्र के किनारे पाण्डु-पथुरा नामक नगर बसाकर वहां रहने का आदेश देते है। यद्यपि यहां कुछ भौगोलिक असंगतियां परिलक्षित होती है, प्रथम तो यह कि दक्षिण-मथुरा (मदुराई) दक्षिण से होकर भी समुद्र के किनारे नहीं है, दूसरे पूर्वीय समुद्र तट से लौटते हुए मार्ग में गंगा का पड़ना आवश्यक नहीं है।

प्रस्तुत कथाप्रसंग श्री कृष्ण का पाण्डवों का मित्र एक शूरवीर योद्धा तथा दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में स्वामी के रूप में चित्रित करता है। विशेषता यह है कि यहां पर श्रीकृष्ण और पाण्डवों के चरित्र के प्रसंग में महाभारत के युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है। उसके स्थान पर अमरकंका में पद्मनाभ से हुए युद्ध का चित्रण है, समानता मात्र यह है कि दोनों ही युद्धों का कारण द्रौपदी है। ज़हां तक मेरी जानकारी है हिन्दू परम्परा में कृष्ण चरित्र के चर्चा प्रसंग में कहीं भी अमरकंका के पद्मनाभ के साथ उनके युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है। मात्र यही नहीं कृष्ण का पाण्डवों परकुपित होना, उन्हें देश निर्वासन की आज्ञा देना आदि प्रसंग भी अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होते है। इस आधार पर हम कह सकते है कि ज्ञाताधर्मकथा में कृष्ण के जीवन प्रसंग के उल्लेख महाभारत एवं श्रीमद्भागवत में कृष्ण के जीवन चरित्र के उल्लेखों से अनेक दृष्टि से भिन्न और प्राचीन है।

ज्ञाताधर्मकथा के ही पांचवे शैलक नामक अध्ययन में थावच्चापुत्र के दीक्षित होने के प्रसंग में श्री कृष्ण, उनकी राजधानी द्वारिका और उनके परिवार का उल्लेख उपलब्ध होता है। उसमें बताया गया है कि द्वारिका नगरी पूर्व–पश्चिम में १२ योजन लम्बी और उत्तर–दक्षिण में ९ योजन चौड़ी थी। यह कुबेर की मति से निर्मित हुई थी। इन्द्र की नगरी अलकापुरी के समान जान पड़ती थी। इस नगर के बाहर उत्तर पूर्व दिशा अर्थात् ईशानकोण में रैवतक (गिरनार) पर्वत था तथा रैवतक पर्वत और द्वारिका के बीच में नन्दनवन नामक उद्यान था। इस द्वारिका नगरी में कृष्ण नामक वासुदेव राजा राज्य करते थे। इस नगर में समुद्रविजय आदि दस दशा है, बलदेव, आदि पांच महावीर, उग्रसेन आदि सोलह हजार राजा, प्रद्युम्न आदि साढ़े तीन करोड़ कुमार, शाम्ब आदि साठ हजार दुर्दान्त योद्धा, वीरसेन आदि एक्कीस हजार पराक्रमी, महासेन आदि छप्पन हजार बलवान पुरुष, रुक्मणी

आदि बत्तीस हजार रानियां, अनंग सेना आदि अनेक गणिकाएं बहुत से ईश्वर (धनाढ्य सेठ), तलवर (कोतवाल), सार्थवाह आदि निवास करते थे। उन कृष्ण वासुदेव का उत्तर दिशा में वैताढ्य पर्वत पर्यन्त तथा तीनों दिशाओं में लवण समुद्र पर्यन्त शासन था। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन मात्र कृष्ण के पारिवारिक एवं राजकीय वैभव का चित्र करता है। यद्यपि इस अध्ययन में दो अन्य प्रमुख घटनाएं कृष्ण के जीवन से संबंधित है– प्रथम तो यह कि कृष्ण को जब यह ज्ञात होता है कि अर्हत् अरिष्टनेमि द्वारिका के बाहर उद्यान में पधारे है तो वे अपने समस्त राज्य परिवार के साथ उनके दर्शनों को जाते है तथा उपदेश सुनते है। अरिष्टनेमि के उपदेश से थावच्चा नामक गाथापत्नि के पुत्र को वैराग्य उत्पन्न होता है। कृष्ण उसके वैराग्य की परीक्षा करते है तथा अत्यन्त वैभवशाली अभिनिष्क्रिमण महोत्सव का आयोजन करते है। वैसे इस अध्याय में श्री कृष्ण की राज्य सम्पदा तथा उदारवृत्ति का परिचय तो मिलता है किन्त उनके जीवन प्रसंगों का कोई उल्लख नहीं है।

जैन आगम साहित्य में एक अन्य ग्रन्थ प्रश्नव्याकरणसूत्र में भी कृष्ण के राज्य और परिवार का विस्तार से वर्णन किया गया है:– ज्ञाताधर्मकथा के शैलक अध्ययन में वर्णित कृष्ण के राज्य और परिवार के विवरण से प्रश्नव्याकरण के विवरण की तुलना करने पर हमें कुछ नवीन सूचनाएं प्राप्त होती है। इसमें कृष्ण की सोलह हजार रानियों का उल्लेख है। प्रश्नव्याकरण का यह विवरण ज्ञाताधर्मकथा के विवरण से इस अर्थ में विशेषता रखता है कि यहां कृष्ण के जीवन के संदर्भ में हिन्दू परम्परा में उल्लेखित अनेक घटनाओं का उल्लेख हुआ है। इसमें कृष्ण के द्वारा मुष्टिक और चाणूर नामक मल्लों का, रिष्ट नामक दुष्ट बैल का, कालिया नामक नाग का, यमुनार्जुन नामक राक्षस का, महाशकुनि और पूतना नामक दो विद्याधरियों का तथा कंस और जरासंघ नामक दो शक्ति सम्पन्न राजाओं का संहार करने का उल्लेख मिलता है। प्रश्नव्याकरण में कृष्ण का यह जीवन–वृत्त विस्तृत रूप में इस प्रकार उल्लेखित है–(प्रश्नव्याकरण पृष्ठ ३६६ से ३६८ से लेना है)

कृष्ण के जीवन प्रसंगों के संदर्भ में अधिक विस्तृत चर्चा करने वाले जैन आगम ग्रन्थों में अन्तकृत्दशा महत्वपूर्ण है। यहां स्मरणीय है कि

वर्तमान में उपलब्ध अन्तकृतदशा की विषयवस्तु पर्याप्त रूप से परिवर्तित हो गई है, क्योंकि अन्तकृतदशा की विषयवस्तु के संदर्भ में स्थानांग, समवायांग, नन्दीसूत्र, तत्वार्थराजवार्तिक, समवायांगवृत्ति, नन्दीचूर्णि एवं अंगप्रज्ञप्ति में जो उल्लेख है, उनमें परस्पर भिन्नता है और अनतकृत्दशा की वर्तमान विषयवस्तु से पूर्णतः मेल नहीं खाते हैं। अन्तकृत्दशा में कृष्ण और उनके परिजनों के उल्लेखयुक्त जो विवरण उपलब्ध हुआ है वह ईसा की छठी शताब्दी से अधिक परवर्ती नहीं माना जा सकता है। क्योंकि नन्दीसूत्र में अन्तकृत्दशा के आठ वर्गों के और नन्दीचूर्णि में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन होने का उल्लेख है जो कि वर्तमान अन्तकृतदशा के विषयवस्तु से समानता रखता है। समवायांगवृत्ति में भी इसके वर्तमान स्वरूप का उल्लेख प्राप्त हो जाता है। अतः नन्दी, नन्दीचूर्णि और समवायांगवृत्ति के पूर्व ही इसको यह स्वरूप प्राप्त हो गया था। ऐसी स्थिति में इसे छटी या सातवीं शताब्दी से अधिक परवर्ती नहीं कहा जा सकता है। अन्तकृत्दशा के आठ वर्गों में प्रथम पांच वर्ग और उनके उन पचास अध्ययन श्री कृष्ण और उनके परिजनों से संबंधित है। प्रथम वर्ग में गौतम, समुद्रसागर, अक्षोभ आदि दस व्यक्तियों का वर्णन है। इस सबके पिता अन्धकवृष्णि और माता धारिणी बताई गई है। अन्धकवृष्णि कृष्ण के दादा होते है। अतः इस आधार पर ये सभी कृष्ण के चाचा कहे जा सकते हैं। दूसरे वर्ग में आठ अध्याय है। उनमें से सागर, समुद्र, अचल और अक्षाम ये चार नाम पूर्व वर्ग में भी आये है। शेष चार नाम हिमवन्त, धरण, पूर्ण और अभिचन्द नवीन है। इन्हें भी अन्धकवृष्णि का पुत्र कहा गया है। इस प्रकार ये सभी कृष्ण के चाचा माने जा सकते है। इन दोनों वर्गों में केवल इन सभी का अरिष्टनेमि के पास दीक्षित होकर तप साधना करने का उल्लेख है। अन्य कोई विवरण उपलब्ध नहीं है। तृतीय वर्ग में तेरह अध्ययन है। इन अध्ययनों में से प्रथम छः अध्ययन अनियसेन, अनन्तसेन, अनहित, विद्धुत, देवयश और शत्रुसेन से संबंधित है। ये सभी कुमार भद्दिलपुर निवासी सुलसा नामक गाथा पत्नि के पुत्र कहे गये है। किन्तु इसी वर्ग के आठवें अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सभी सुलसा के पालित पुत्र थे। वस्तुतः ये सभी देवकी और वसुदेव के ही पुत्र है। इस प्रकार श्रीकृष्ण के सहोदर थे। इनका पालनपोषण

क्यों और किस प्रकार सुलसा के द्वारा हुआ यह चर्चा हम बाद में गजसुकुमाल की कथा प्रसंग में करेंगे। इन छहों के अतिरिक्त कृष्ण के अन्य सहोदर गजसुकुमाल का भी विस्तृत वर्णन इस वर्ग में हैं। गजसुकुमाल के जीवन वृत्त की चर्चा हम आगे स्वतंत्र रूप में करेंगे। इस वर्ग में अन्य जिन व्यक्तियों का उल्लेख है उनमें सारन, दारूक और अनाधृष्टि भी वसुदेव और धारिणी के पुत्र थे और इस प्रकार वे भी अन्य माता से उत्पन्न श्री कृष्ण के ही भाई थे। अन्य व्यक्तियों में सुमुख दुर्मुख और कूपदारक ये तीन बलदेव के पुत्र थे। इस प्रकार ये तीनों श्रीकृष्ण के भतीजे थे। इस प्रकार तीसरे वर्ग में कृष्ण के दस भाईयों और तीन भतीजों का उल्लेख है। चतुर्थ वर्ग में जो दस अध्ययन है उनमें है जालि, मयालि, उपालि, पुरुषसेन और वायुसेन ये पांच वसुदेव और धारिणी के पुत्र कहें गये है। इस प्रकार ये भी श्री कृष्ण के भाई थे, प्रद्युम्न और शाम्ब ये दो कृष्ण के पुत्र थे। यद्यपि इनमें प्रद्युम्न की माता रूक्मणी और शाम्ब की माता जाम्बवती थी। अनिरूद्ध कुमार को प्रद्युम्न और वैदर्भी का पुत्र बताया गया है। इस प्रकार अनिरूद्ध कृष्ण के पौत्र है। सत्यनेमि और दृढ़नेमि समुद्रविजय और शिवादेवी के पुत्र कहे गये है। अतः ये अरिष्टनेमि के सहोदर और श्री कृष्ण के चचेरे भाई कहे जा सकते है।

इस प्रकार चौथे वर्ग में कृष्ण के दो चचेरे भाई, पांच भाई, दो पुत्र और एक पौत्र का उल्लेख है। पांचवे वर्ग में १. पद्मावती २. गौरी ३. गान्धारी ४. लक्ष्मणा ५. सुसीमा ६. जाम्बवती ७. सत्भामा और ८. रूक्मिणी – इन आठ कृष्ण की पटरानियों एवं मूलश्री एवं मूलदत्ता नामक दो पुत्रवधुओं का उल्लेख है। ये सभी रानियां द्वारिका के विनाश की भविष्यवाणी सुनकर अरिष्टनेमि के पास दीक्षित होने का निर्णय करती है और श्रीकृष्ण समारोह पूर्वक उन्हें प्रवज्या ग्रहण करवाते है। इनमें मूलश्री और मूलदत्ता कृष्ण और जाम्बवत के पुत्र शाम्बकुमार की पत्नियां अर्थात् श्रीकृष्ण की पुत्रवधुएँ थी। इस प्रकार हम देखते है कि अन्तकृत्दशा के प्रथम पाँच वर्ग और उनके उनपचास अध्याय श्री कृष्ण के परिवार से ही संबंधित है। अन्तकृतदशा में श्री कृष्ण के जिन परिजनों का उल्लेख हुआ है उनमें से अनेक तो ऐसे हैं जिनका नाम हमें हिन्दू परम्परा के अन्य ग्रन्थों में मिल जाता है। किन्तु उनमें कुछ ऐसे भी है जिनका उल्लेख हमें अन्यत्र कहीं नहीं

मिलता है। चाहे इन सभी नामों की ऐतिहासिकता विवादास्पद हो, किन्तु इससे कृष्ण और उनके परिजनों का जैन परम्परा में क्या स्थान है, यह स्पष्ट हो जाता है।

द्वारिका के विनाश एवं श्रीकृष्ण के भावी तीर्थंकर होने की भविष्यवाणी :– प्रस्तुत अष्टमअंग आगम श्रीकृष्ण जीवनवृत्त के संबंध में कुछ नई सूचनाएं भी प्रदान करता है। इसमें द्वारिका के विनाश की कथा एक भिन्न ढंग से चित्रित की गई है। यद्यपि उस पर हिन्दू परम्परा का स्पष्ट प्रभाव भी देखा जा सकता है। अंतकृत्दशा के अनुसार श्रीकृष्ण अरिष्टनेमि से द्वारिका के भविष्य के संदर्भ में प्रश्न पूछते है। अपने परिजनों को अरिष्टनेमि के पास दीक्षित होता देखकर उनके मन में एक आत्मग्लानि उत्पन्न होती है कि मैं इस राज्य लक्ष्मी का त्याग करके प्रभु के पास प्रव्रज्या ग्रहण करने में अपने को असमर्थ क्यों अनुभव कर रहा हूँ तथा राज्य और अन्तःपुर में गृद्ध बना हुआ हूँ। अरिष्टनेमि श्रीकृष्ण के इस मनोभाव को जानकर कहते है कि हे कृष्ण सभी वासुदेव राजा निदान करके जन्म लेते है अतः उनके द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण करना सम्भव नहीं होता है। यहां कृष्ण अरिष्टनेमि से अपनी मृत्यु और भावी जीवन के संबंध में प्रश्न करते है। अरिष्टनेमि उन्हें बताते है कि यादवकुमार मद्यपान करके जब द्वैपायन ऋषि को क्रुद्ध करेंगे, तब द्वैपायनऋषि अग्निकुमार देव होकर इस द्वारिका का विनाश करेंगे। उस समय तुम अपने माता-पिता और स्वजनों के वियोग से दुःखी होकर बलराम के साथ दक्षिणी समुद्र तट की ओर पाण्डु-मथुरा की ओर प्रस्थान करोंगे। रास्ते में कौशाम्बवन उद्यान में तुम पीताम्बर ओढ़कर सोओगे। उस समय जराकुमार मृग के भ्रम में तुम पर तीर चलाएगा। उस तीर से विद्ध होकर तुम तीसरी पृथ्वी में उत्पन्न होओगे। वहां की आयु पूर्व कर इसी जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में पुण्ड्र जनपद की शतद्वारा नामक नगरी में अमम नाम के बारवें तीर्थंकर होओगे (द्रट्व्य है कि समवायांग सूत्र में भविष्यकाल तीर्थंकरों में अमम का नाम १३वां बताया गया है।) श्री कृष्ण द्वारिका के विनाश और अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी सुनकर द्वारिका के निवासियों और अपने परिजनों को अरिष्टनेमि के पास प्रव्रज्या लेने हेतु प्रोत्साहित करते है। परिणाम स्वरूप कृष्ण की अनेक रानियां और पुत्र–परिजन प्रव्रज्या ग्रहण कर लेते है।

कृष्ण के लघुभ्राता गजसुकुमाल की कथा— अन्तकृत्दशा में कृष्ण के सात भाईयों का उल्लेख हमें उपलब्ध होता है। जिनमें से अनियसकुमार आदि छः का पालन-पोषण भद्दिलपुर नगर के नाग नामक गाथापति की पत्नि सुलसा द्वारा होता है। कथा के अनुसार देवकी को किसी भविष्यवेत्ता ने एक सरीखे आठ पुत्रों को जन्म देने की भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार सुलसा को भी मृतपुत्र होने की भविष्यवाणी की थी। सुलसा ने हरिणगमेषी नामक देव की आराधना की और वह देव प्रसन्न हुआ। कथा प्रसंग के अनुसार देवकी और सुलसा साथ-साथ गर्भवती होती है और साथ-साथ प्रसव भी करती थी। पुत्र प्रसव के समय वह देव सुलसा के मृत पुत्रों को देवकी के पास और देवकी के पुत्रों को सुलसा के पास रख देता था। इस प्रकार देवकी के प्रथम छः पुत्र सुलसा के द्वारा पालित और पोषित हुए। कालांतर में सुलसा के ये छहो सहोदर भाई देवकी के गृह पर दो-दो के समूह में भिक्षार्थ आते है। उनके समरूप और समवयस्क होने के कारण देवकी को यह भ्रम हो जाता है कि वे ही मुनि बार-बार भिक्षा के लिए आ रहे है। निर्ग्रन्थ श्रमण किसी भी घर में भिक्षार्थ दूसरीबार प्रवेश नहीं करता है। अतः वह तीसरे समूह में आये मुनियों से अन्त में यह बात पूछ ही लेती है कि क्या द्वारिका नगरी में मुनियों को आहार उपलब्ध होने में कठिनाई हो रही है जिसके, कारण आपको बार-बार मेरे द्वार पर आना पड़ रहा है। मुनि वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते है कि हम छहों भाई एक सरीखे होने के कारण ही आपको ऐसा भ्रम हो गया है। देवकी को अपनी भविष्यवाणी का स्मरण होता है कि मुझे एक सरीखे आठ पुत्रों की भविष्यवाणी की गई थी, किन्तु मेरी अपेक्षा यह सुलसा ही भाग्यवान है। वह अपनी इस मनोव्यथा के स्पष्टीकरण के लिये अरिष्टनेमि के पास जाती है और अरिष्टनेमि उसे बताते है कि छहो भाई वस्तुतः तुम्हारे ही पुत्र है। सुलसा ने तो इनका पालन-पोषण ही मात्र किया है। देवकी वापस लौटकर अत्यन्त शोकाकुल होती है और विचार करती है कि मैंने सात पुत्रों को जन्म दिया किन्तु उनमें से किसी की भी बालक्रीड़ा का अनुभव नहीं कर सकी। क्योंकि छः सुलसा के द्वारा और एक नन्द और यशोदा के द्वारा पालित पोषित किये गए। देवकी यह विचार कर ही रही थी कि, उसी समय श्रीकृष्ण माता के चरण वन्दन हेतु आते है और माता की चिन्ता का कारण पूछते हैं। देवकी

सारी वस्तुस्थिति को स्पष्ट करती है। श्रीकृष्ण अपनी माता के दुःख को दूर करने के लिए तथा अपने एक और सहोदर भाई उत्पन्न होने के लिए पौषधशाला में जाकर तीन दिन का उपवास कर देव का आराधन करते है। देव प्रसन्न होकर कहता है कि निश्चय ही तुम्हें एक छोटा भाई प्राप्त होगा, किन्तु अल्प वय में ही वह दीक्षित हो जाएगा। कालान्तर में देवकी को पुत्र प्रसव होता है। श्रीकृष्ण अपने लघुभ्राता को युवावस्था प्राप्त होते देखकर सोमिल ब्राह्मण की कन्या सोमा से उसके विवाह का निर्णय करते है। दूसरी ओर द्वारिका के बाहर उद्यान में अरिष्टनेमि का आगमन होता है। अरिष्टनेमि के उपदेशों को सुनकर गजसुकुमाल को वैराग्य हो जाता है। माता-पिता और भाई के सांसारिक भोग भोगने के लिये अत्यंत आग्रह के होते हुए भी गजसुकुमाल दीक्षित होने का निर्णय लेते है। श्रीकृष्ण उनका दीक्षा महोत्सव करते है। गजसुकुमाल दीक्षित होने के दिन ही भिक्षु–प्रतिमा अंगीकार करते हैं और महाकाल श्मशान में ध्यानमग्न खड़े हो जाते हैं। उधर से गजसुकुमाल का भावी श्वसुर सोमिल ब्राह्मण निकलता है, गजसुकुमाल को मुण्डित श्रमण देखकर कुपित होता है। उनके सिर पर मिट्टी की पाल बनाकर घधकते अंगारे रख देता है। गजसुकुमाल ध्यान से विचलित न होते हुए उस वेदना को सहन करते हैं तथा अपने मन में किसी प्रकार का द्वेष या आक्रोश नहीं लाते है। फलतः उसी दिन मुक्ति को प्राप्त करते है। श्रीकृष्ण अपने लघुभ्राता के दर्शन के लिए अरिष्टनेमि के पास जाते है और उनसे सारे घटना चक्र को जानने की अपेक्षा करते है। अरिष्टनेमि उन्हें केवल इतना ही बताते है कि जिस प्रकार तुमने एक वृद्ध को सहयोग देकर दुःख मुक्त किया था उसी प्रकार तुम्हारे भाई को भी एक व्यक्ति ने सहयोग देकर संसार चक्र से मुक्त कर दिया है। इस कथा प्रसंग में अवान्तर रूप से श्रीकृष्ण की सहयोग भावना का निम्न प्रसंग हमें मिलता है–

श्रीकृष्ण अपने लघु भ्राता गजसुकुमाल के साथ जब अरिष्टनेमि के वन्दन को जाते हैं, तो उन्हें मार्ग में ईंटों का एक बहुत बड़ा ढ़ेर दिखाई पड़ता है। वे देखते है कि एक वृद्ध जो अत्यन्त जर्जर और क्षीणकाय है उस विशालकाय ढेर में से एक-एक ईंट उठाकर घर के अन्दर रख रहा है। श्रीकृष्ण उसकी उस पीड़ा को देखकर हाथी पर बैठे हुए ही एक ईंट उठाते

है और उसके घर में डाल देते है। श्रीकृष्ण के साथ आनेवाला समुदाय और सैन्यबल भी उसका अनुसरण करता है और इसप्रकार अल्पसमय में ही वह विशालकाय ईंटों की राशि वृद्ध के घर पहुँच जाती है।

यहां हम देखते है कि अन्तकृत्दशा में वर्णित कथा प्रसंग में अनियस आदि देवकी के छह पुत्रों की सुलसा के मृत पुत्रों के साथ परिवर्तन की घटना गजसुकुमाल के जन्म और दीक्षा की कथा तथा श्रीकृष्ण के द्वारा उस वृद्ध को सहयोग देने की अवान्तर कथा ये सभी उल्लेख जैन परम्परा के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं पाये जाते है। हिन्दू परम्परा में देवकी श्रीकृष्ण से पूर्व होने वाले पुत्र-पुत्रियों के जो उल्लेख है वे इस कथा से एकदम भिन्न है। फिर भी दोनों में इतना साम्य अवश्य है कि दोनों परम्पराओं में कंस के कोप से बचने के लिए देवकी पुत्रों का स्थानांतरण हुआ है।

श्री कृष्ण के पूर्वज — वसुदेवहिण्डी में श्रीकृष्ण के पूर्व पूर्वजों की चर्चा करते हुए यह बताया गया है कि हरिवंश में सोरि और वीर नामक दो भाई उत्पन्न हुआ। सोरि ने अपनी राजधानी सोरिकुल में स्थापित की और वीर ने सौवीर में। ये दोनों एक दूसरे के प्रति अत्यंत अनुराग रखते थे और कोष, कोष्ठागार एवं राज्य आदि का विभाजन किये बिना ही राज्यश्री का उपभोग करते थे। सोरि के पुत्र अन्धकवृष्णी और उनकी पत्नी से समुद्रविजय आदि दस पुत्र और कुन्ती एवं माद्री नाम दो कन्यायें उत्पन्न हुई। दूसरी ओर वीर का पुत्र भोगवृष्णी हुआ। उसका पुत्र उग्रसेन और उग्रसेन के पुत्र बन्धु, सुबन्धु, कंस आदि हुए। अन्धकवृष्णि के दस पुत्रों में वसुदेव दसवें पुत्र थे। इसी प्रसंग में समुद्रविजय आदि के पूर्वभव की चर्चा की भी गई है। वसुदेव के पूर्व भव की चर्चा करते हुए यह बताया गया है कि वह पूर्वभव में नन्दिसेन थे।

तुलनात्मक विवरण :– जहाँ तक कृष्ण के माता-पिता के नाम और जन्म का प्रश्न है, जैन परम्परा और हिन्दू परम्परा में विशेष अंतर नहीं है। दोनों ही परम्पराएँ कृष्ण को वासुदेव एवं देवकी का पुत्र मानती है तथा जन्म के पश्चात् यशोदा के द्वारा उनके लालन-पालन की बात भी स्वीकार करती है। दोनों परम्पराओं के अनुसार कृष्ण के अन्य सात भाईयों का उल्लेख हुआ है। किन्तु दोनों परम्पराओं में कृष्ण के अन्य भाईयों के कथानक के संबंध में अंतर पाया जाता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार

बलभद्र और श्रीकृष्ण के जन्म के पूर्व देवकी के छः पुत्रों को कंस पछाड़कर मार डालता है। यद्यपि जैन ग्रन्थ वसुदेवहिण्डी में भी कंस के द्वारा देवकी के छः पुत्रों के मार डालने का उल्लेख है किन्तु जिनसेन के उत्तरपुराण तथा हेमचन्द्र के त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र में तथा अन्तकृत्दशा के अनुसार देवकी के गर्भ से उत्पन्न ये छहों पुत्र हरिनगमेष नामक देवता के द्वारा सुलसा के यहां पहुँचा दिये गये और सुलसा के मृतपुत्रों को देवकी के पास लाकर रख दिया जाता है। इस प्रकार जैन परम्परा मुख्य रूप से कृष्ण के सहोदर इन छः भाईयों को सुलसा के द्वारा पालित मानती है जो आगे चलकर तीर्थंकर नेमि के पास दीक्षित होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेते है। श्रीमद भागवत के अनुसार बलभद्र का देवकी के गर्भ से विष्णु के आदेश एवं योगमाया शक्ति के द्वारा रोहिणी के गर्भ में संहरण है जबकि जैन परम्परा के किसी भी ग्रन्थ में इस संहरण की घटना का उल्लेख नहीं है। बल्कि यह पाया जाता है कि बलभद्र रोहिणी के गर्भ से सहज जन्म लेते है। यद्यपि यहां यह स्मरणीय तथ्य अवश्य है कि जैन परम्परा में जो महावीर के गर्भ संहरण की बात कही जाती है वह मूल में कहीं बलदेव के गर्भ-संहरण की घटना से प्रभावित तो नहीं है, जिसे जैनों ने अपने अनुरूप मोड़ लिया हो। बलभद्र को कृष्ण का सहोदर भाई न मानने के कारण जैन परम्परा में कृष्ण के सात भाईयों की संख्यापूर्ति के लिये गजसुकुमाल की कथा का विकास हुआ।

श्रीकृष्ण के यशोदा के यहां स्थानांतरण की बात दोनों परम्पराएं समान रूप से स्वीकार करती है, किन्तु जहां श्रीमद्भागवत में यशोदा के गर्भ से जन्मी पुत्री को, जो कि विष्णु की योगमाया का ही स्वरूप थी, कंस पटक कर मार डालने का प्रयत्न करता है, किन्तु योगमाया होने के कारण वह मृत नहीं होती है तथा आकाश में चली जाती है और काली दुर्गा आदि की शक्ति के रूप में पूजी जाती है। जैन परम्परा में वासुदेवहिण्डी और जिनसेन के उत्तरपुराण के कथनानुसार कंस उसे मारता नहीं है, अपितु नाक काटकर अथवा नाकटपटी करके छोड़ देता है। यही बालिका आगे साध्वी के रूप में दीक्षित हो जाती है और अपनी ध्यानसाधना के द्वारा देव-गति को प्राप्त करती है।

किन्तु हरिवंश में जिनसेन (द्वितीय) ने यह उल्लेख किया है कि उसकी अंगुली के रक्त से सने हुए तीन टुकड़े से वह त्रिशूलधारिणी काली

के रूप में विन्ध्याचल (मिर्जापुर के समीप) में प्रतिष्ठित हो जाती है। जिनसेन ने इस देवी के सम्मुख होनेवाले भैंसों के वध की भी चर्चा की है जो विन्ध्यांचल में आज तक प्रचलित है। इस प्रकार जिनसेन द्वितीय ने इस कथानक को हिन्दू परम्परा के साथ जोड़ा है।

कृष्ण की बाल लीलाओं के संबंध में दोनों परम्पराएँ लगभग समान मन्तव्य रखती है। यद्यपि श्रीमद्भागवत के अनुसार कंस के द्वारा भेजे गये सभी असुर आदि कृष्ण या बलभद्र के द्वारा मार डाले जाते है, जबकि जिनसेन प्रथम तो जैनों के अहिंसा के दृष्टिकोण के आधार पर इन्हें राक्षस न कहकर देव या देवियां कहता है। दूसरे कृष्ण या बलदेव उन्हें मारते नहीं है अपितु हराकर जीवित ही छोड़ देते है। यद्यपि प्रश्नव्याकरणसूत्र के अनुसार कृष्ण के द्वारा इन्हें मारे जाने का उल्लेख है। हेमचन्द्र अपने त्रिशष्टिश्लाकापुरुषचरित में जिनसेन के समान ही यह मानते है कि श्रीकृष्ण इन्हें हराकर भगा देते है। यद्यपि जहां जिनसेन प्रथम ने इन्हें देवी-देवता के रूप में स्वीकार किया है, वही हरिवंशपुराण में जिनसेन द्वितीय इनका कंस के द्वारा भेजे गये उन्मत्त प्राणियों के रूप में उल्लेख करते है।

जैसा कि हम पूर्व में उल्लेख कर चुके है कि जहां हिन्दू परम्परा में पाण्डवों एवं कृष्ण के जीवन के साथ महाभारत के युद्ध की घटना जुड़ी हुई है वहां जैसा आगम ग्रन्थों में महाभारत की घटना का सर्वथा अभाव है। यद्यपि परवर्ती जैन लेखकों ने महाभारत की घटना का उल्लेख किया है।

जहां हिन्दू परम्परा कंस को कृष्ण का मुख्य प्रतिद्वन्दी मानकर चित्रित करती है वहीं जैन परम्परा में कृष्ण का मुख्य प्रतिद्वन्दी जरासंघ को माना गया है। क्यों कि वह प्रतिवासुदेव है और उसे विजय करके ही कृष्ण वासुदेव के पद को प्राप्त करते है।

यद्यपि यादवों के और द्वारका के विनाश के मूल में यदुवंशी का मद्यपायी होना दोनों ही परम्परा में सामान्य रूप से स्वीकार है और उसे ही यादव वंश के नाश का कारण माना गया है। फिर भी जैन परम्परा में द्वारका और यादव वंश के विनाश को कुछ भिन्न तरीके से चित्रित किया गया है। जैन परम्परा के अनुसार द्वारका और यादव वंश के विनाश की भविष्यवाणी सुनकर श्रीकृष्ण यह घोषणा करवाते है कि जो भी व्यक्ति अरिष्टनेमि के

पास दीक्षित होगा उसके परिवार के पालन-पोषण की व्यवस्था राज्य करेगा। इसी प्रसंग में कृष्ण के द्वारा अपनी आठों पत्नियों, पुत्रवधुओं आदि को अरिष्टनेमि के पास दीक्षित करवाने के भी उल्लेख मिलते है।

जहां तक श्री कृष्ण की मृत्यु (लीला संहरण) का प्रश्न है दोनों ही परम्पराएं जराकुमार के बाण से उनकी मृत्यु का होना स्वीकार करती है किन्तु वैष्णव परम्परा के अनुसार वे नित्यमुक्त है और अपनी लीला का संहरण कर गोलोक में निवास करने लगते है। वहां जैन परम्परा के अनुसार वे अपनी मृत्यु के पश्चात् भविष्य में आगामी उत्सर्पिणी में भरतक्षेत्र में १२वें अमम नामक तीर्थंकर होकर मुक्ति को प्राप्त करेंगे—ऐसा उल्लेख है। इस प्रकार दोनों परम्पराएं यद्यपि कृष्ण के जीवनवृत्त को अपने विवेचन का आधार बनाती है, फिर भी दोनों ने उसे अपने-अपने अनुसार मोड़ने का प्रयास किया है। जैसा कि हमने संकेत किया है कि श्रीकृष्ण के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं है जिनका विवरण हमें जैन ग्रन्थों में ही मिलता है, पौराणिक साहित्य में नहीं मिलता है। श्रीकृष्ण के पद्मोत्तर से हुए युद्ध के वर्णन तथा गजसुकुमाल के जीवन की घटना, उनका नेमिनाथ के साथ संबंध आदि ऐसी घटनाएं है जिनका उल्लेख हिन्दू परम्परा में या तो नहीं है या बहुत अल्प है। जबकि जैन परम्परा में ये विस्तार से चर्चित है। इस प्रकार कृष्ण के संबंध में जैन कथानकों का अपना वैशिष्ठ्य है।

घर से निकाला

भूरचन्द जैन

भारतीय युवक विद्याध्ययन करने के लिये इंग्लैण्ड गया और वहां ग्वालों की बस्ती में एक ग्वाले के यहां मेहमान बनकर रहा।

ग्वाला प्रतिदिन अपने पशुओं से दूध निकालता और उसे बेचता रहता। लेकिन वह दूध में कभी भी पानी नहीं मिलाता था।

एक दिन ग्वाले के पशुओं से प्रतिदिन निकलने वाले दूध से कुछ दूध कम निकला। ग्वाला उदास हो गया। ग्वाले को उदास देखकर इनके यहां ठहरे भारतीय युवक ने कहा कि दूध कम निकलने पर आप व्यर्थ ही उदास रहे है। जितना दूध कम निकला उसमें पानी मिला दो। मात्रा बराबर हो जायेगी।

इंग्लैण्ड के ग्वाले ने ऐसी गलत एवं अप्रमाणिक सलाह देने पर भारतीय युवक को बड़े ही कठोर शब्दों में ताड़ना देते हुए कहा कि आप मेरे घर में रहने लायक नहीं हो और यहां से चले जाओ।

भारतीय युवक ने अपनी इस असत्य एवं अप्रमाणिक सलाह के लिये माफी भी मांगी। लेकिन इंग्लैण्ड के ग्वाले ने सोचा कि आज मैं इसको माफ कर दूंगा और भविष्य में इसने ऐसी गलत, असत्य, अप्रमाणिक सलाह दी और मन विचलित हो गया तो अनर्थ हो जायेगा ऐसा विचार आते ही ग्वाले ने आखिर उसे घर से बाहर निकाल दिया।

समय की कीमत

भूरचन्द जैन

भारत में वस्तुओं की कीमत निर्धारित नहीं होने के कारण भारतीय अक्सर किसी वस्तु को खरीद करने जाते है तो दुकानदार जो कीमत बताता है ग्राहक उससे कम करने पर दबाव डालता है और दुकानदार भी कीमत कम कर देता है। यह भारतीयों की आदत बन चुकी है।

एक भारतीय यूरोप गया। वहां उसने एक दुकानदार से एक वस्तु खरीदी। दुकानदार ने उसकी कीमत चार रूपये बतायी तब भारतीय ग्राहक ने दुकानदार से अपनी आदत के कारण कहा कि कुछ कीमत कम करो। तब यूरोप के दुकानदार वस्तु की कीमत पांच रूपये बताई। भारतीय ग्राहक ज्यों-ज्यों कीमत कम करने को कहता यूरोप के दुकानदार त्यों-त्यों उसकी कीमत बढ़ा देता।

आखिर भारतीय ग्राहक ने कहा कि मैं कीमत कम करने को बार-बार कहता जा रहा हूं और आप कीमत बराबर बढ़ाते जा रहे है ऐसा क्यों? तब यूरोप के दुकानदार ने कहा कि हमारे यहां वस्तु की कीमत निर्धारित है और आप कीमत घटाने के नाम पर हमारा समय बर्बाद कर रहे हो। इस कारण हम समय बर्बादी करने लिये वस्तु की कीमत बढ़ाते है। दुकानदार की बात सुनकर भारतीय ग्राहक बहुत शर्मिन्दा हुआ।

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2247 6874, Resi: 2246 7707

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

S P M L

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228,
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone:
2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

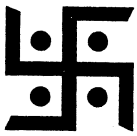

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

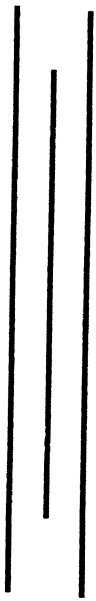

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 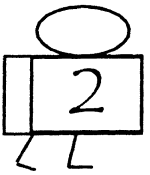 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices
BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO. 7 TITTHAYARA October 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225